Result Mitra
दैनिक जागरण
The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE
दैनिक भास्कर
Daily
THE HINDU
जनसत्ता
CURRENT
AFFAIRS
IAS/PCS
अब होगी करंट अफेयर्स की राह आसान
24 January

Quote of the Day

Result Mitra

अपने मिशन में कामयाब होने के लिए, आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकचित्त निष्ठावान होना पड़ेगा।

अजीजन बाई - प्रमुख व्यक्तित्व

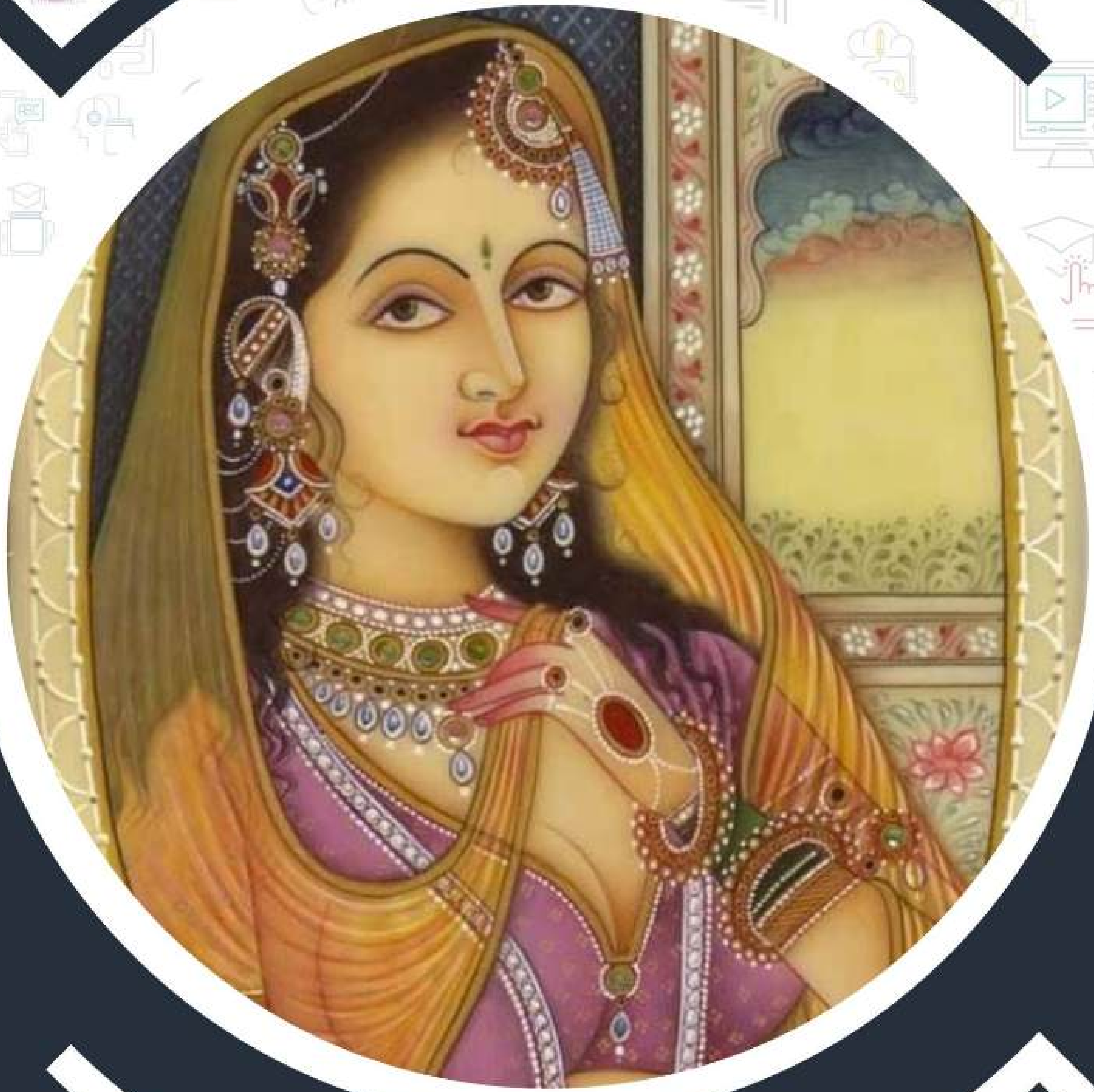

Result Mitra

अजीजन बाई - प्रमुख व्यक्तित्व

Result Mitra

- अजीजन बाई 1857 के भारतीय विद्रोह की एक वीरांगना थीं।
- पेशेवर नर्तकी और देशभक्त: अजीजन बाई मूल रूप से एक पेशेवर नर्तकी थीं, लेकिन उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

अजीजन बाई

- **क्रांतिकारियों की सहयोगी:** अजीजन बाई न केवल खुद एक वीरांगना थीं, बल्कि वे क्रांतिकारियों की भी मदद करती थीं। वे उनके साथ बैठकर रणनीतियाँ बनाती थीं और उन्हें गुप्त सूचनाएँ पहुँचाती थीं।
- **नाना साहेब से संबंध:** तात्या टोपे ने अजीजन बाई को नाना साहेब से मिलवाया था। नाना साहेब ने उन्हें अपनी बहन घोषित किया और अपनी तलवार उन्हें सौंप दी, जो इस बात का प्रतीक था कि वे उन्हें अपना पूरा समर्थन देते हैं।

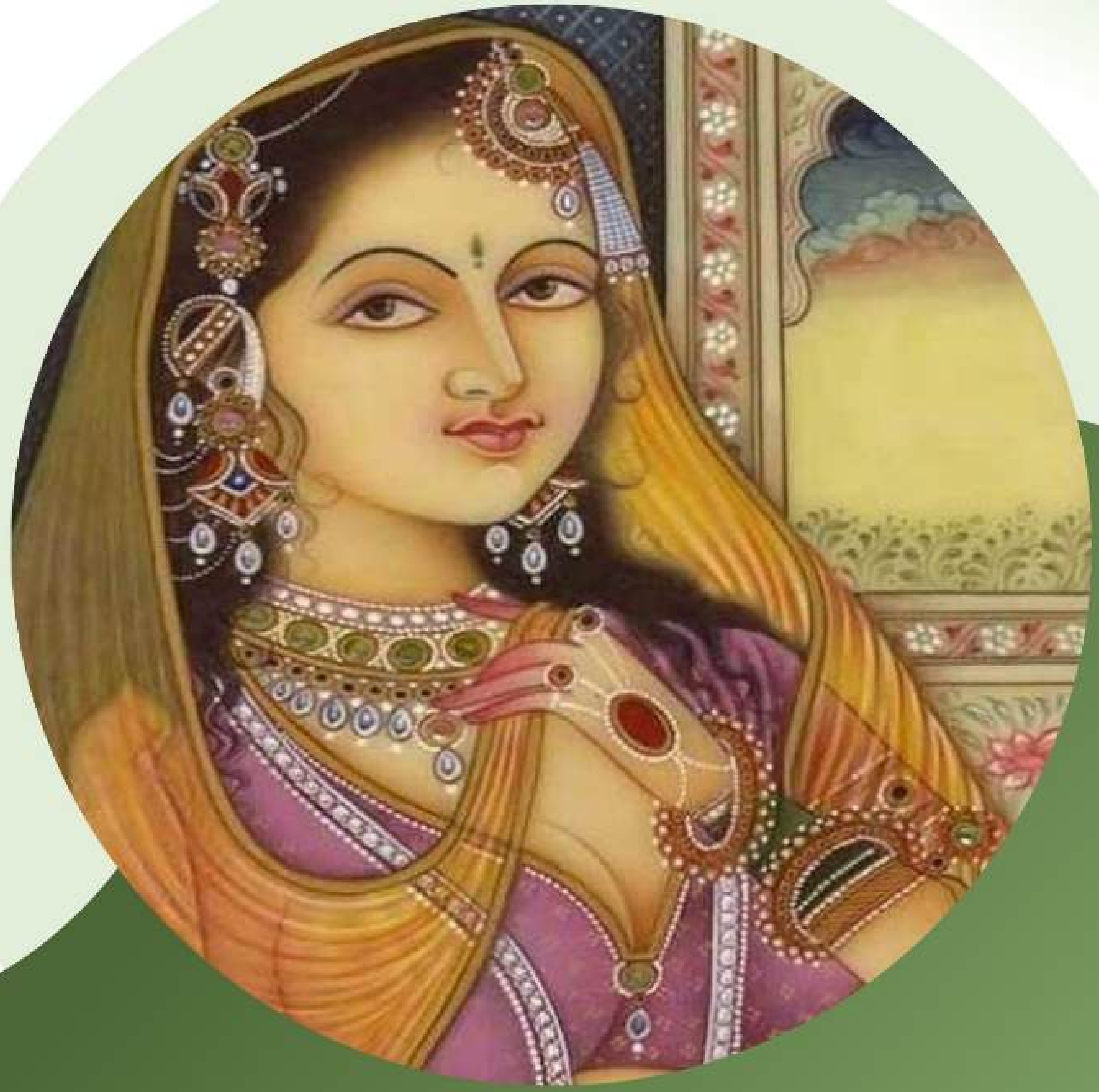

अजीजन बाई

- अंग्रेजों का मुकाबला: अजीजन बाई ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में सक्रिय रूप से भाग लिया था। उन्होंने अपनी वीरता और साहस से अंग्रेजों को कई बार हराया था।
- बलिदान: अजीजन बाई को 20 सितंबर 1857 को अंग्रेजों ने पकड़ लिया था और उन्हें फाँसी दे दी गई थी। उन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

अजीजन बाई

- अजीजन बाई की कहानी हमें यह प्रेरणा देती है कि हमें हमेशा अपने देश के लिए वफादार रहना चाहिए और अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। वे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण शख्सियत हैं और उनकी वीरता को हमेशा याद रखा जाएगा।

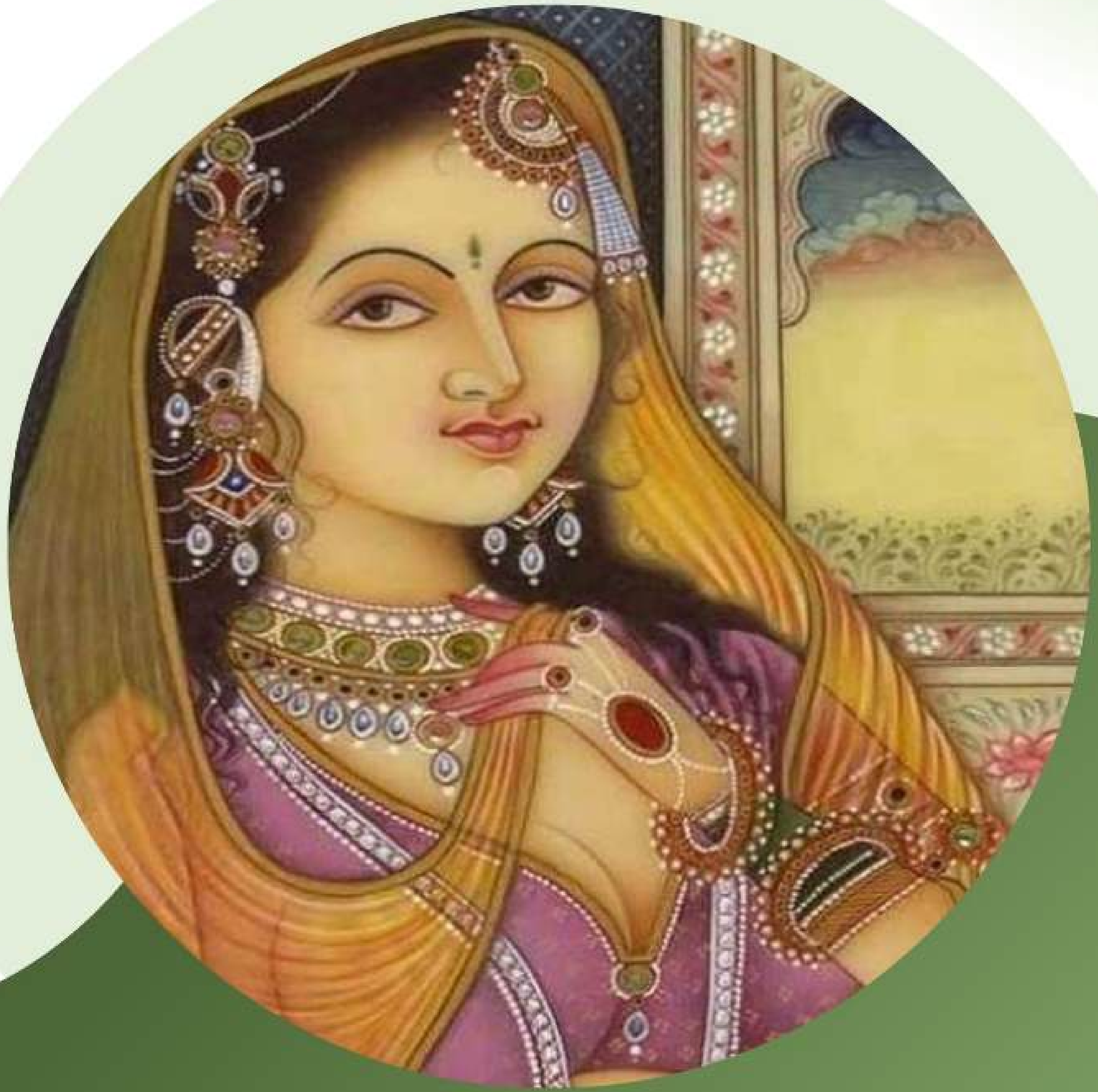

1857 का भारतीय विद्रोह

- 1857 का भारतीय विद्रोह, जिसे सिपाही विद्रोह या प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के विरुद्ध 1857-58 में भारत में हुआ एक बड़ा विद्रोह था।

Result Mitra

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के मुख्य कारण:

राजनीतिक कारण:

- लॉर्ड डलहौजी की 'व्यपगत का सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) और 'सहायक संधि' (Subsidiary Alliance) जैसी नीतियों के कारण कई भारतीय शासकों के राज्य अंग्रेजों द्वारा हड़प लिए गए थे, जिससे उनमें असंतोष था।

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के मुख्य कारण:

सामाजिक-धार्मिक कारण:

- ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन के प्रयासों और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से भारतीय समाज में आक्रोश था।

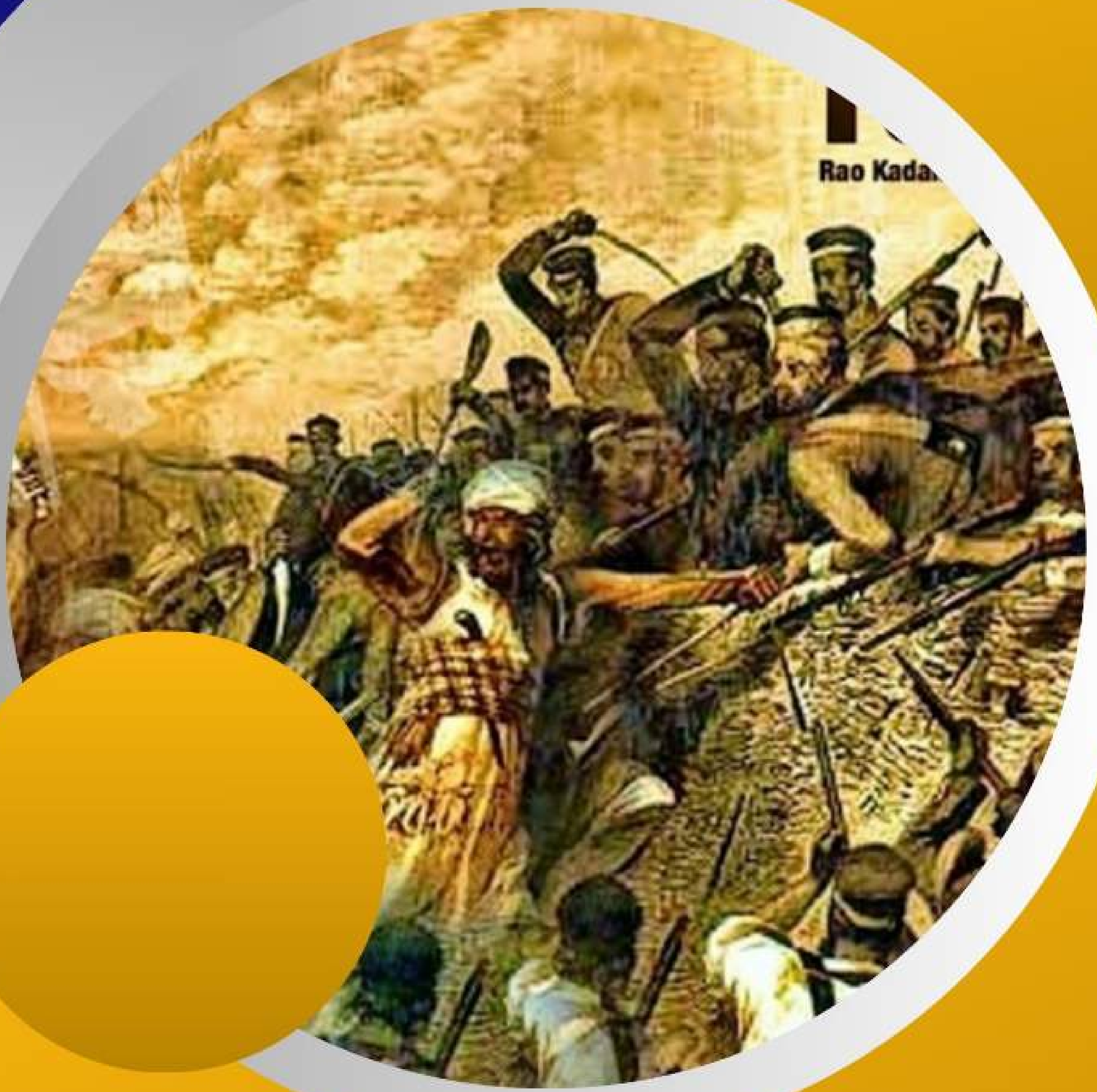

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के मुख्य कारण:

आर्थिक कारण:

- अंग्रेजों की नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया था, जिससे किसानों, कारीगरों और व्यापारियों में गरीबी और बेरोजगारी फैल गई थी।

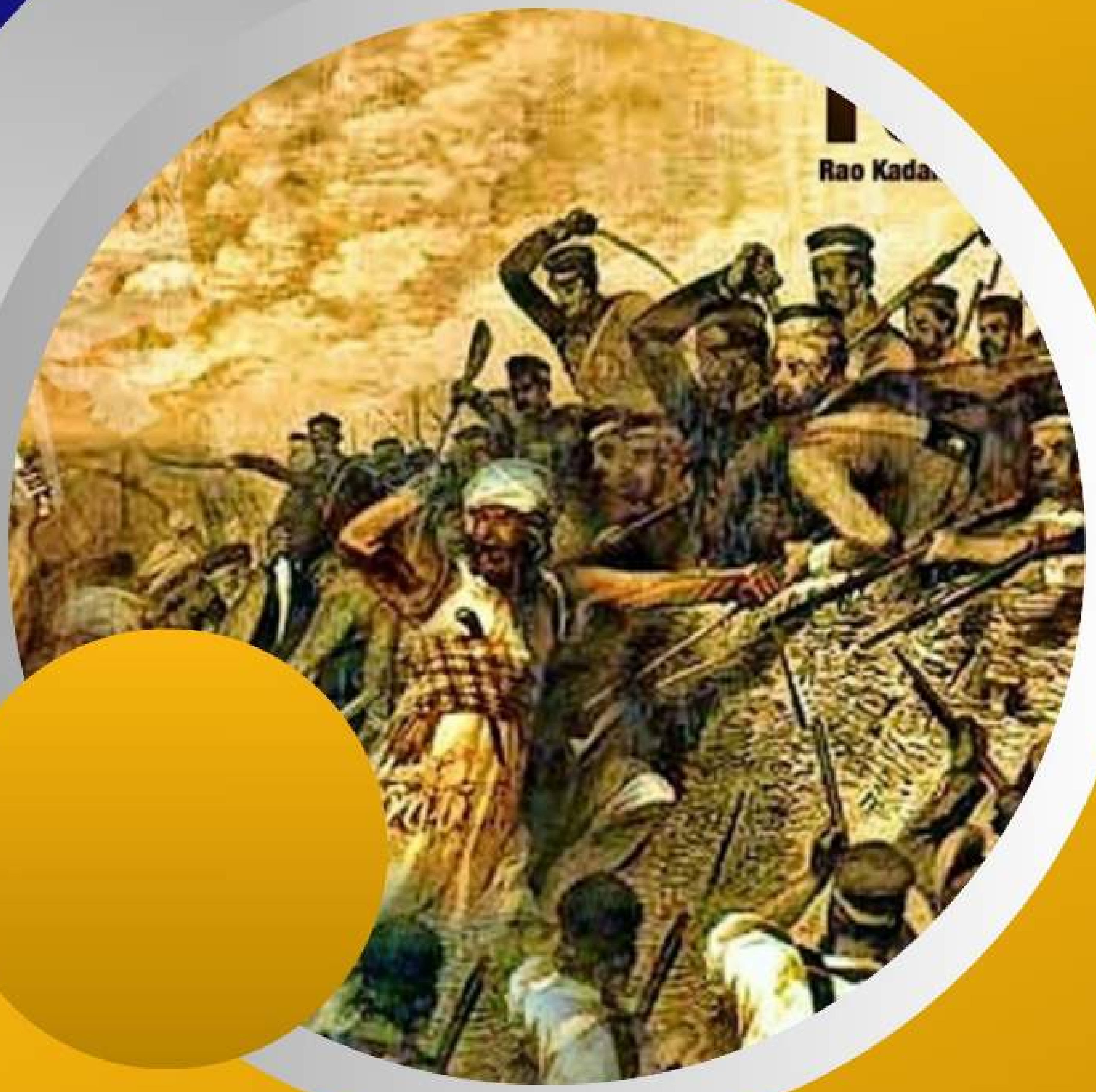

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के मुख्य कारण:

सैन्य कारण:

- भारतीय सिपाहियों को कम वेतन, पदोन्नति के कम अवसर और चर्बी वाले कारतूसों (जिनमें गाय और सुअर की चर्बी लगी होती थी) के प्रयोग के कारण धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचने जैसे कारणों से असंतोष था।

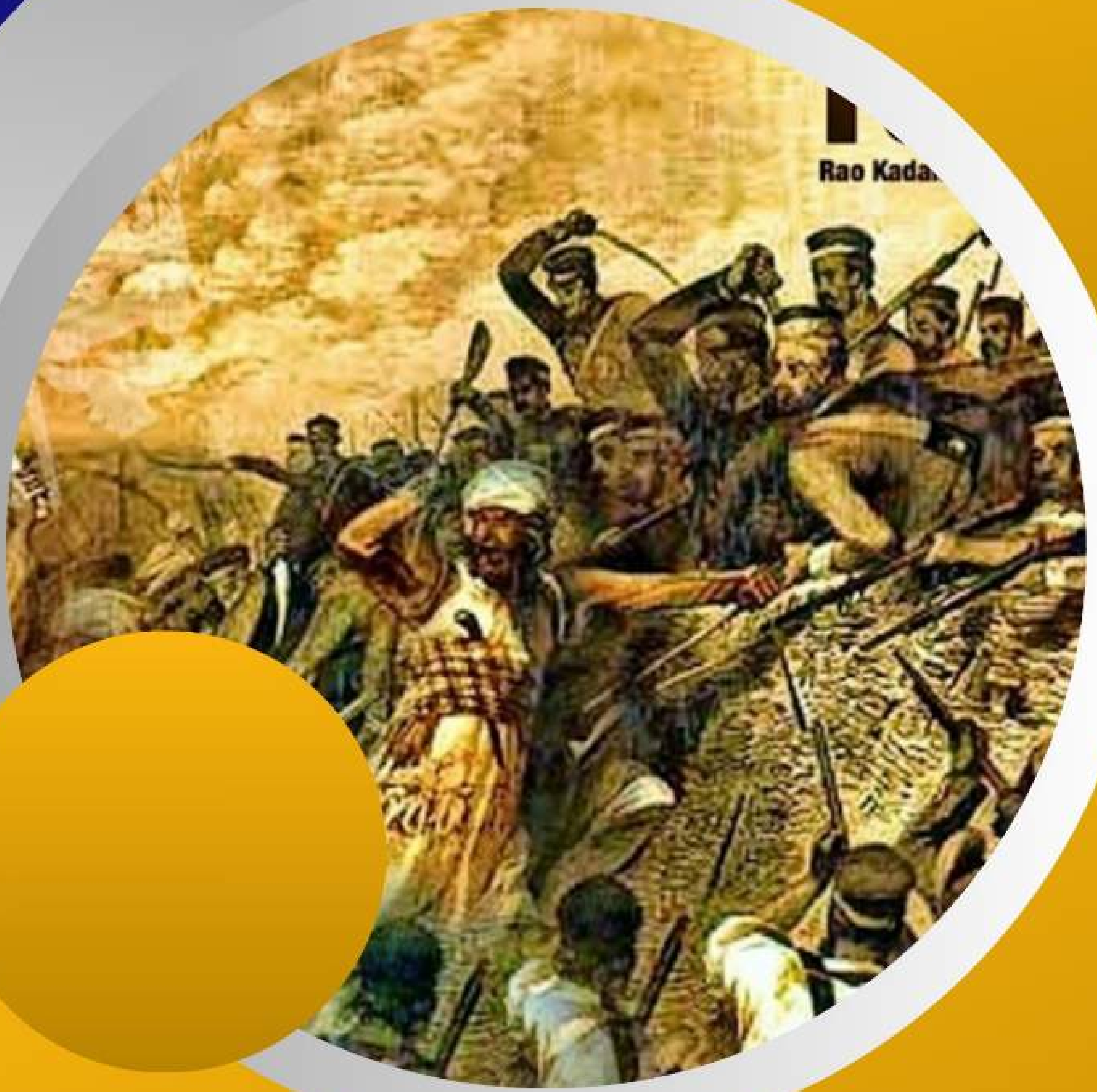

Result Mitra

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह की शुरुआत और प्रसार:

- विद्रोह की शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ से हुई, जब भारतीय सिपाहियों ने चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग करने से इनकार कर दिया और विद्रोह कर दिया।
- विद्रोह जल्दी ही दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी, ग्वालियर और अन्य क्षेत्रों में फैल गया।
- विद्रोह में नाना साहेब, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह जफर जैसे नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

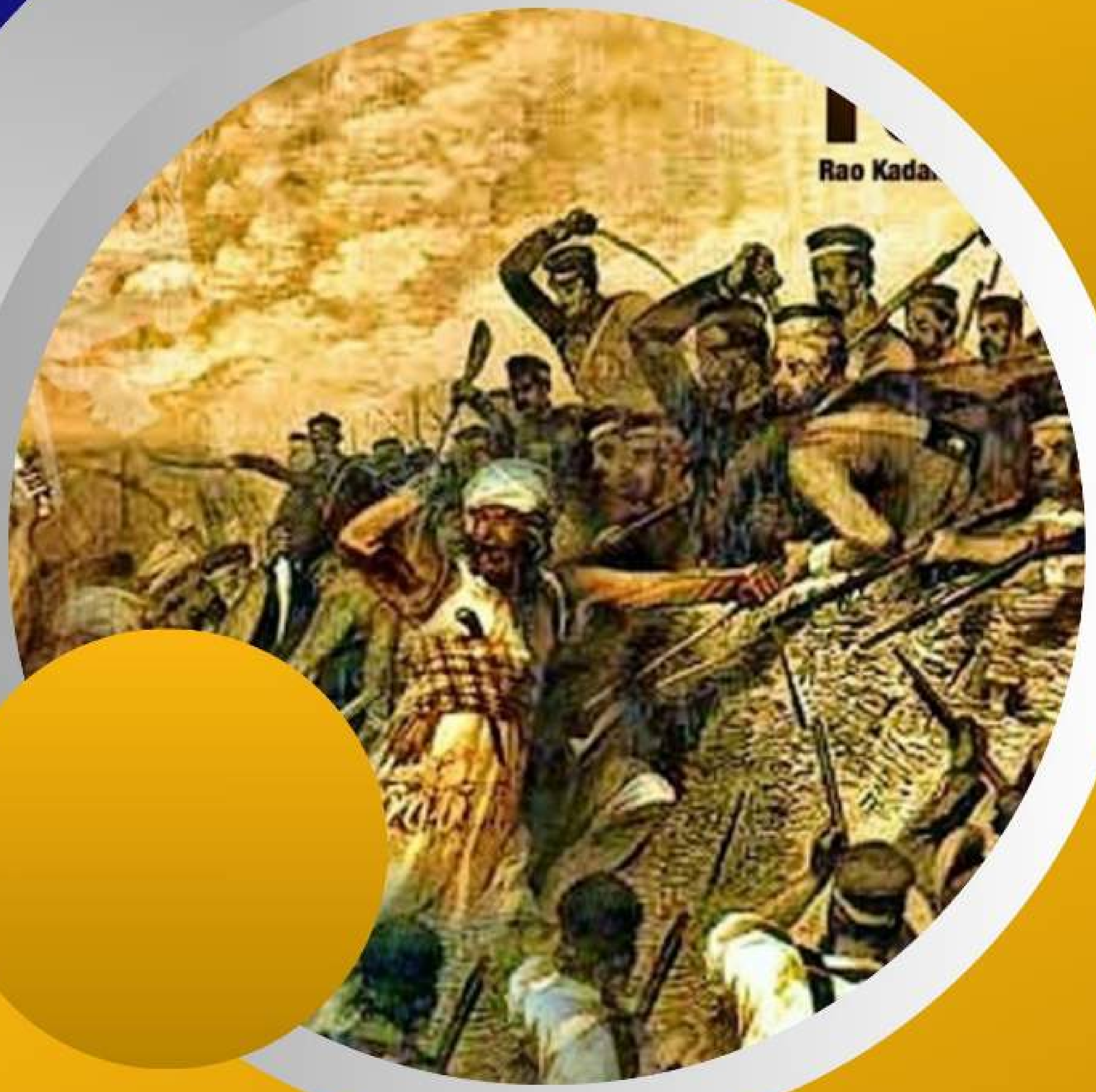

Result Mitra

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह का अंत और परिणाम:

- अंग्रेजों ने अंततः 1858 तक विद्रोह को दबा दिया।
- विद्रोह के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया और भारत सीधे ब्रिटिश ताज के नियंत्रण में आ गया।
- विद्रोह ने भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत किया और भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलनों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बना।

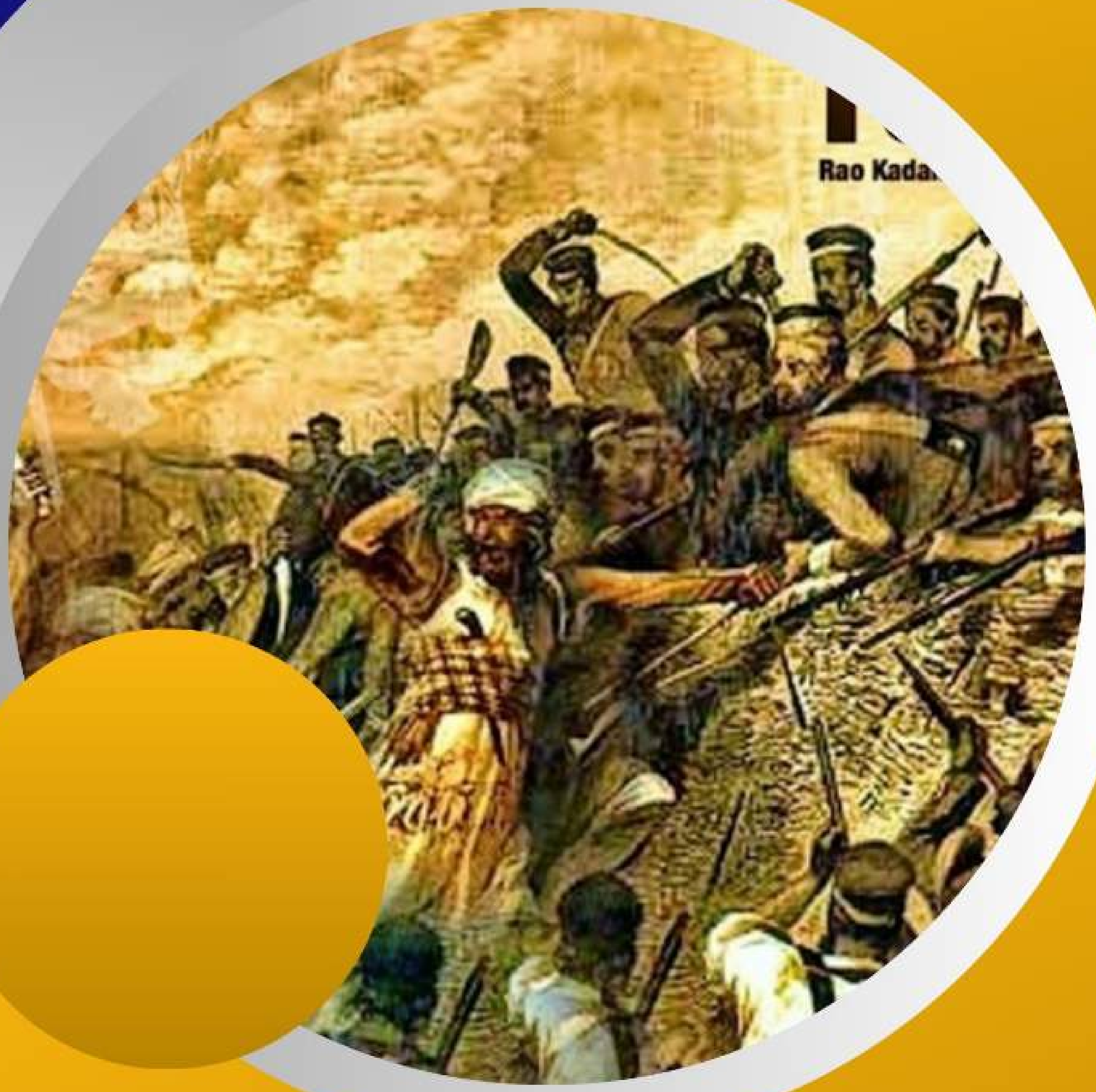

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

- विद्रोह की शुरुआत चर्बी वाले कारतूसों के कारण हुई थी, लेकिन इसके पीछे कई अन्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक कारण भी थे।
- विद्रोह मुख्य रूप से उत्तर भारत में फैला था।

Result Mitra

1857 का भारतीय विद्रोह

विद्रोह के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

- विद्रोह में हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।
- विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी थी और भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: 1857 के भारतीय विद्रोह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह विद्रोह केवल चर्बी वाले कारतूसों के मुद्दे से शुरू हुआ था और इसका कोई अन्य व्यापक सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक कारण नहीं था।

2. अजीजन बाई, जो एक पेशेवर नर्तकी थीं, ने इस विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और क्रांतिकारियों को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

3. विद्रोह के परिणामस्वरूप, ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया और भारत सीधे ब्रिटिश ताज के नियंत्रण में आ गया।

4. यह विद्रोह मुख्य रूप से दक्षिण भारत में फैला था और इसमें हिन्दू और मुस्लिम समुदायों की सक्रिय भागीदारी नहीं थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर - ठाकुर रोशन सिंह

Result Mitra

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर ठाकुर रोशन सिंह के बारे में:

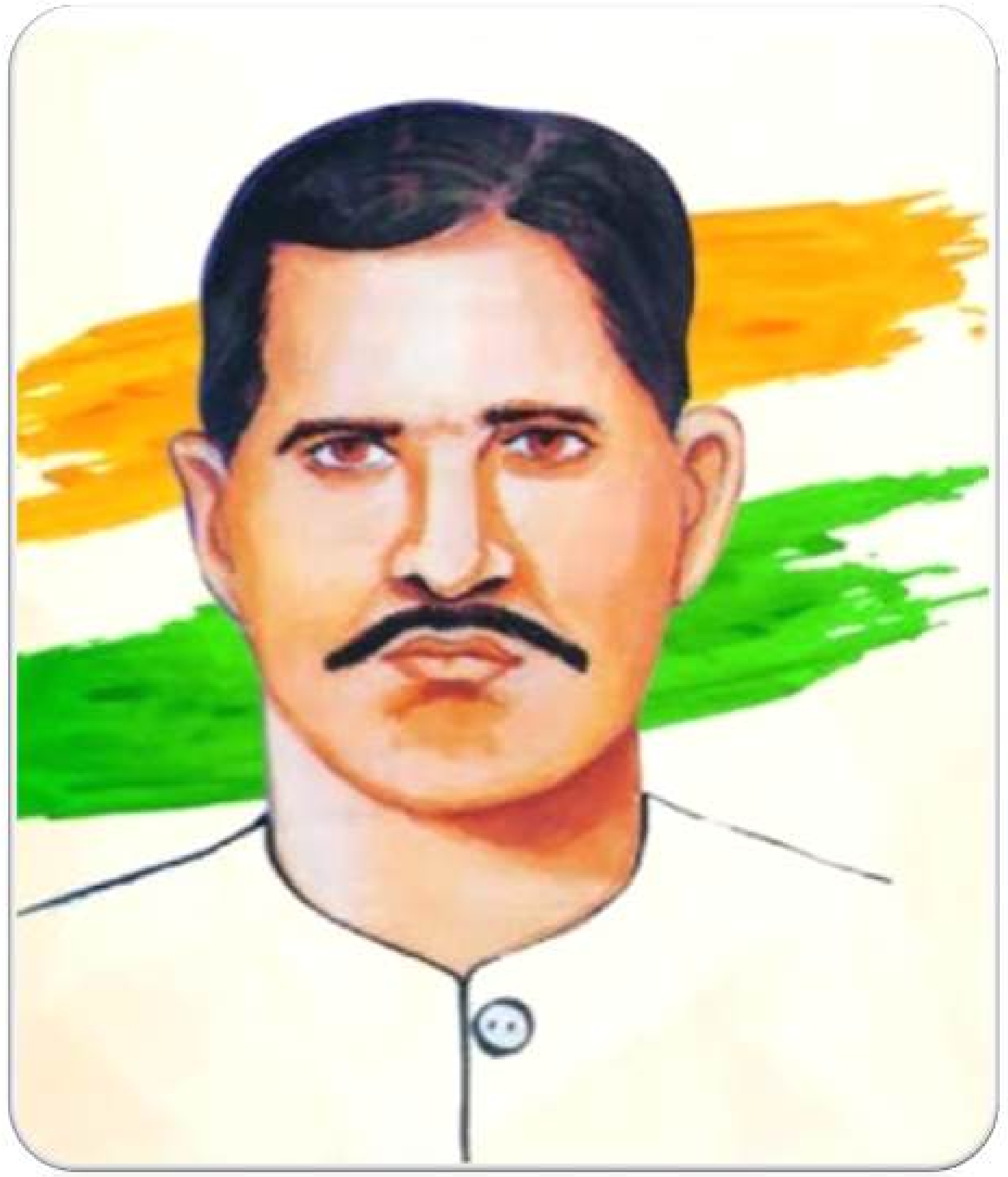

जन्म और परिवार:

- ठाकुर रोशन सिंह का जन्म 22 जनवरी 1892 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जिले के नबादा गाँव में एक राजपूत परिवार में हुआ था।
- उनके पिता का नाम ठाकुर जंगी सिंह और माता का नाम कौशल्या देवी था। उनका परिवार आर्य समाज से प्रभावित था।

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर ठाकुर रोशन सिंह के बारे में:

स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी:

- वे भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान बरेली में एक गोलीकांड में भाग लिया, जिसके लिए उन्हें सजा भी हुई थी।
- जेल से लौटने के बाद वे हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) में शामिल हो गए, जिसमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान और राजेंद्र लाहिड़ी जैसे क्रांतिकारी शामिल थे।

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर ठाकुर रोशन सिंह के बारे में:

बमरौली डकैती:

- ठाकुर रोशन सिंह बमरौली डकैती की घटना में भी शामिल थे, जहाँ उन्होंने अकेले ही एक पहलवान को गोली मारकर हत्या कर दी थी।

काकोरी कांड और फांसी:

- वे काकोरी कांड में भी शामिल थे, जिसके लिए उन्हें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान और राजेंद्र लाहिड़ी के साथ फांसी की सजा सुनाई गई थी।

Result Mitra

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर ठाकुर रोशन सिंह के बारे में:

- **बहादुरी और देशभक्ति:** ठाकुर रोशन सिंह बचपन से ही बहुत बहादुर थे और लगातार क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेते थे। बरेली गोलीकांड में उन्होंने एक अंग्रेज पुलिसकर्मी की बंदूक छीनकर भीड़ पर गोलियाँ चला दी थीं।
- **शहादत:** ठाकुर रोशन सिंह को 19 दिसंबर 1927 को फांसी दी गई थी। उनकी शहादत ने क्रांति की ज्वाला को और तेज कर दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिवीर ठाकुर रोशन सिंह के बारे में:

- **मुख्यमंत्री द्वारा श्रद्धांजलि:** मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी ठाकुर रोशन सिंह की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

ठाकुर रोशन सिंह एक वीर क्रांतिकारी थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। उनकी बहादुरी, देशभक्ति और बलिदान को हमेशा याद रखा जाएगा।

काकोरी कांड

- काकोरी कांड, जिसे अब काकोरी ट्रेन एक्शन के नाम से जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के पास काकोरी नामक एक गाँव में हुई थी।

Result Mitra

Result Mitra™

काकोरी कांड

घटना क्या थी?

- यह एक ट्रेन डकैती थी जिसमें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के क्रांतिकारियों ने सहारनपुर से लखनऊ जा रही एक ट्रेन को लूट लिया था। उनका मकसद ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटना था ताकि उस धन का उपयोग क्रांतिकारी गतिविधियों को चलाने के लिए हथियार खरीदने में किया जा सके।

Result Mitra

काकोरी कांड

प्रमुख क्रांतिकारी:

- इस घटना में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी, चंद्रशेखर आज़ाद, केशव चक्रवर्ती, मुकुंदी लाल और बनवारी लाल सहित कई क्रांतिकारियों ने भाग लिया था। राम प्रसाद बिस्मिल इस पूरी योजना के मुख्य सूत्रधार थे।

Result Mitra

काकोरी कांड

परिणामः

- ब्रिटिश सरकार इस घटना से बहुत क्रोधित हुई और उसने क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए व्यापक अभियान चलाया। कई क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया।
- राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी और रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई, जबकि अन्य को कारावास की सजा हुई।

काकोरी कांड

Result Mitra

नाम परिवर्तन:

- उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल ही में 'कांड' शब्द की नकारात्मक भावना को देखते हुए इस घटना का नाम बदलकर 'काकोरी ट्रेन एक्शन' कर दिया है।

महत्व:

- काकोरी कांड भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसने क्रांतिकारियों के साहस और दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित किया और ब्रिटिश सरकार को एक कड़ी चुनौती दी। इस घटना ने देश भर में स्वतंत्रता की भावना को और मजबूत किया।

काकोरी कांड

Result Mitra

कुछ अतिरिक्त तथ्य:

- यह घटना हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन द्वारा आयोजित की गई थी, जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराना था।
- क्रांतिकारियों द्वारा लूटे गए धन का उपयोग हथियार खरीदने और अन्य क्रांतिकारी गतिविधियों को चलाने के लिए किया जाना था।
- काकोरी कांड ने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया था और उसने क्रांतिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की थी।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: ठाकुर रोशन सिंह और काकोरी ट्रेन एक्शन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ठाकुर रोशन सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला खान के साथ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के सक्रिय सदस्य थे।

2. काकोरी ट्रेन एक्शन 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के निकट काकोरी नामक गाँव में घटित एक सशस्त्र डकैती थी, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटना था।

3. ठाकुर रोशन सिंह को बरेली गोलीकांड में उनकी भूमिका के लिए भी सजा सुनाई गई थी, जो असहयोग आंदोलन के दौरान हुई थी।

4. काकोरी कांड के परिणामस्वरूप, ठाकुर रोशन सिंह को चंद्रशेखर आज़ाद के साथ फांसी की सजा सुनाई गई थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

Result Mitra™

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार -2025

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार -2025

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के बारे में:

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) को पुरस्कार:

- भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS), हैदराबाद को संस्थागत श्रेणी में सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के लिए चुना गया है। यह पुरस्कार आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देता है।

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार -2025

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के बारे में:

- **पुरस्कार की घोषणा:** यह पुरस्कार हर साल 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर घोषित किया जाता है।
- **पुरस्कार में शामिल:** इस पुरस्कार में नकद राशि और एक प्रमाण पत्र शामिल हैं। संस्थागत श्रेणी के लिए पुरस्कार राशि ₹51 लाख और व्यक्ति के लिए ₹5 लाख है।

51 लाख

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के बारे में:

नामांकन प्रक्रिया:

- वर्ष 2025 के पुरस्कार के लिए नामांकन 1 जुलाई 2024 से आमंत्रित किए गए थे और अंतिम तिथि 31 अगस्त 2024 थी। पुरस्कार योजना का प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार किया गया था। संस्थाओं और व्यक्तियों से 297 नामांकन प्राप्त हुए थे।

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के बारे में:

पुरस्कार का उद्देश्य:

- यह पुरस्कार आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है।

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के बारे में:

- भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS) को आपदा प्रबंधन में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तियों और संस्थानों के प्रयासों को मान्यता देने और प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

सुभाष चंद्र बोस

- सुभाष चंद्र बोस, जिन्हें नेताजी के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख और अत्यंत प्रभावशाली नेता थे।
- उनका जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक में हुआ था और उनकी मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइवान में एक विमान दुर्घटना में हुई मानी जाती है, हालाँकि इस पर विवाद है।

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस

उनके जीवन के मुख्य पहलू:

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:

- सुभाष चंद्र बोस एक बंगाली परिवार में जन्मे थे। उन्होंने अपनी शिक्षा कलकत्ता (अब कोलकाता) में पूरी की। उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (ICS) की परीक्षा भी पास की, लेकिन जल्द ही उन्होंने इसे त्याग दिया क्योंकि वे ब्रिटिश शासन के अधीन काम नहीं करना चाहते थे।

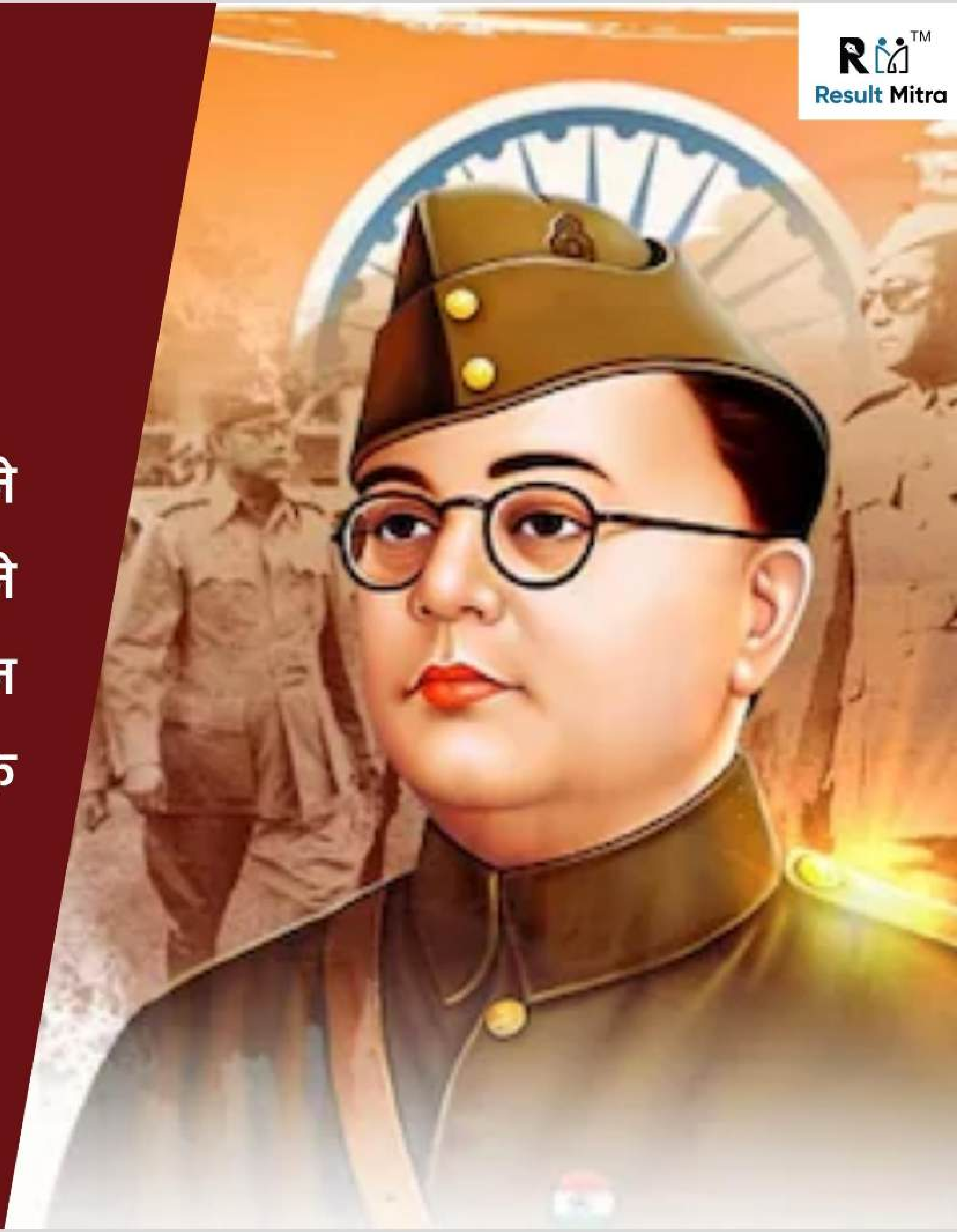

सुभाष चंद्र बोस

उनके जीवन के मुख्य पहलू:

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भूमिका:

- बोस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और जल्द ही एक महत्वपूर्ण नेता बन गए। वे जवाहरलाल नेहरू के साथ कांग्रेस के वामपंथी गुट के प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे 1938 और 1939 में दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

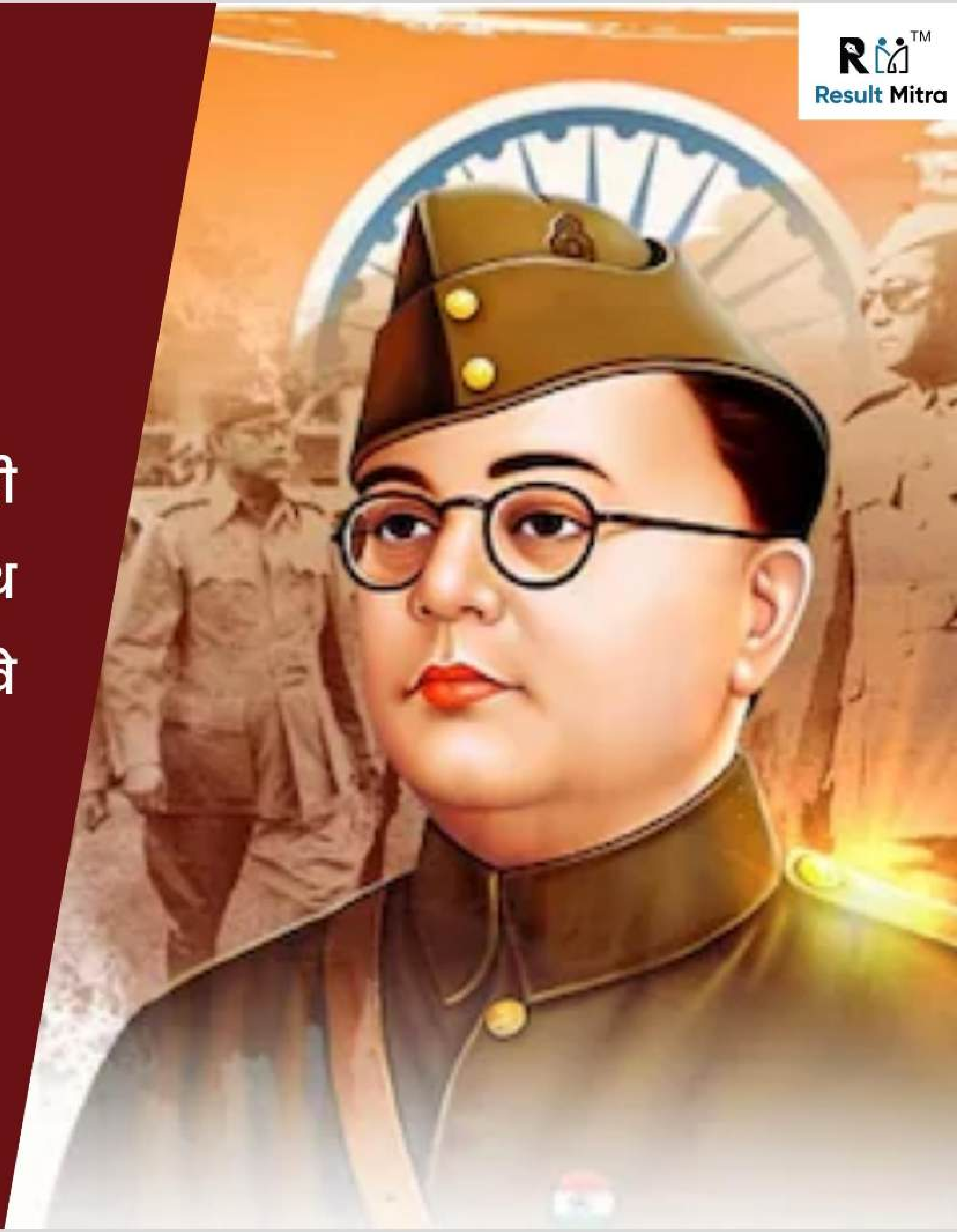

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस

उनके जीवन के मुख्य पहलू:

फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना:

- 1939 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद, बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक नामक एक नई पार्टी की स्थापना की। इसका उद्देश्य भारत की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना था।

सुभाष चंद्र बोस

उनके जीवन के मुख्य पहलू:

आज़ाद हिन्द फ़ौज (INA):

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, बोस ने जर्मनी और जापान की यात्रा की और उनसे भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्थन मांगा। उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज (इंडियन नेशनल आर्मी) का गठन किया, जिसमें भारतीय युद्धबंदियों और प्रवासी भारतीयों को शामिल किया गया था।

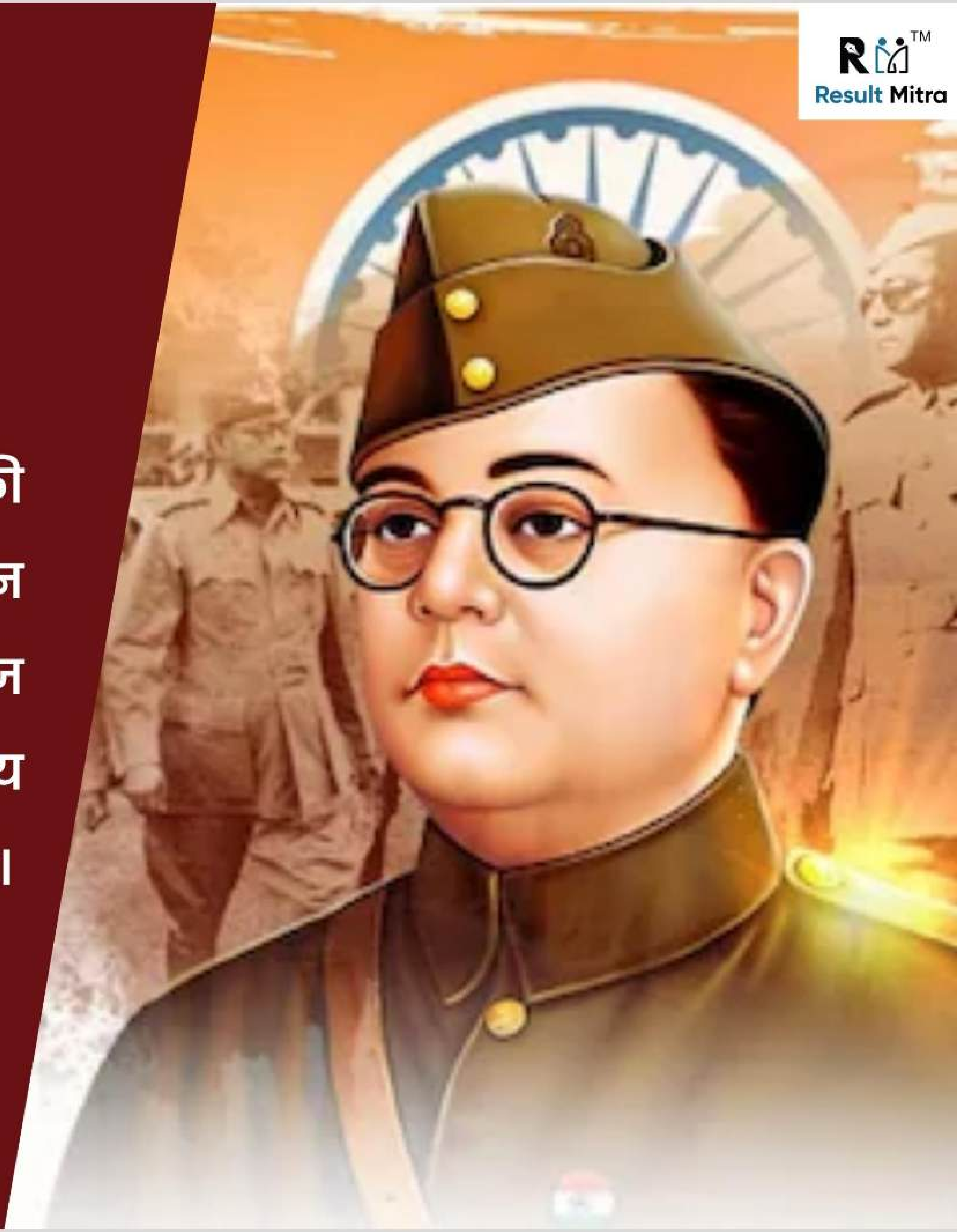

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस

उनके जीवन के मुख्य पहलू:

- "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा" का नारा: बोस का यह प्रसिद्ध नारा आज भी भारतीयों को प्रेरित करता है।
- रहस्यमयी मृत्यु: 18 अगस्त 1945 को ताइवान में एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई मानी जाती है, लेकिन उनकी मृत्यु की परिस्थितियों को लेकर आज भी रहस्य बना हुआ है। कई लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते कि उनकी मृत्यु विमान दुर्घटना में हुई थी।

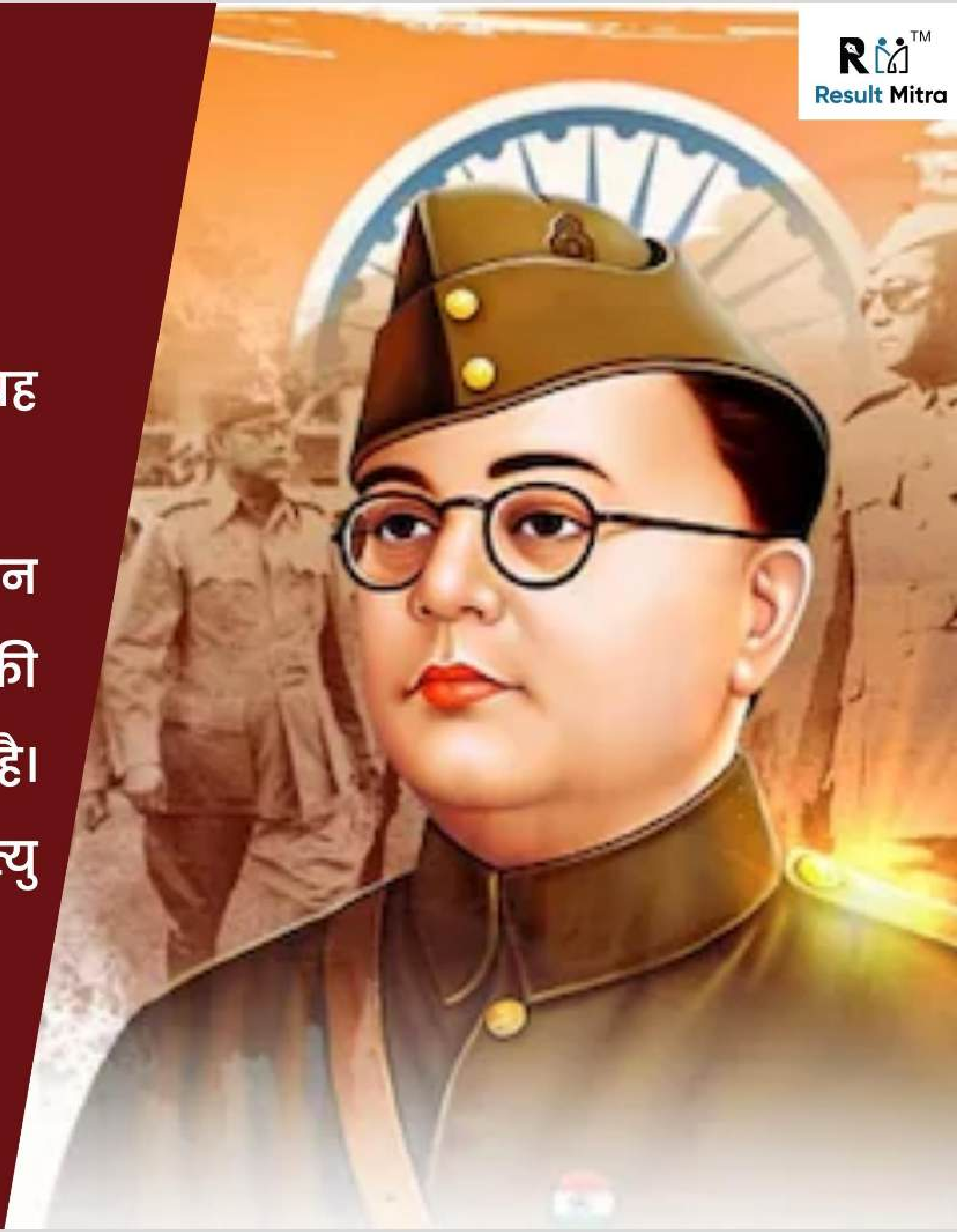

Result Mitra

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस का योगदान:

- सुभाष चंद्र बोस का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने अपने जोशीले भाषणों और क्रांतिकारी गतिविधियों से देश के युवाओं को प्रेरित किया।
- आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था। इसने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया था और भारतीय स्वतंत्रता के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस का योगदान:

- सुभाष चंद्र बोस एक महान देशभक्त और नेता थे जिन्होंने अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया। उन्हें आज भी भारत में बहुत सम्मान के साथ याद किया जाता है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह पुरस्कार प्रतिवर्ष 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर घोषित किया जाता है।
2. यह पुरस्कार केवल आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है।
3. वर्ष 2025 के लिए संस्थागत श्रेणी में यह पुरस्कार भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (INCOIS), हैदराबाद को दिया गया है।
4. इस पुरस्कार के अंतर्गत संस्थागत श्रेणी के विजेता को ₹1 करोड़ की नकद राशि प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

Result Mitra™

खेलो इंडिया विंटर गेम्स - 2025

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के बारे में:

आयोजन स्थल:

- खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 का आयोजन दो चरणों में लद्दाख और जम्मू-कश्मीर में होगा।
- लद्दाख में आइस स्पोर्ट्स (आइस हॉकी और आइस स्केटिंग) और जम्मू-कश्मीर में स्नो स्पोर्ट्स (अल्पाइन स्कीइंग, नॉर्डिक स्कीइंग, स्की माउंटेनियरिंग और स्नोबोर्डिंग) आयोजित किए जाएंगे।

Result Mitra

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के बारे में:

तारीखें:

- लद्दाख में आइस इवेंट: 23 से 27 जनवरी 2025 तक।
- जम्मू-कश्मीर में स्नो इवेंट: 22 से 25 फरवरी 2025 तक।

Result Mitra

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के बारे में:

उद्घाटन:

- केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया लद्दाख में खेलो इंडिया शीतकालीन खेल 2025 का उद्घाटन करेंगे।

भागीदारी:

- राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और संस्थागत संगठनों वाली उन्नीस टीमें प्रतिस्पर्धा करेंगी।

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के बारे में:

खेल:

- आइस हॉकी, आइस स्केटिंग, अल्पाइन स्कीइंग, नॉर्डिक स्कीइंग, स्की माउंटेनियरिंग और स्नोबोर्डिंग।

महत्व:

- यह खेलो इंडिया सीजन की शुरुआत है और शीतकालीन ओलंपिक्स के लिए प्रतिभा की पहचान करने का एक मंच है।

Result Mitra

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 के बारे में:

- खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 का आयोजन लद्दाख और जम्मू-कश्मीर में दो चरणों में होगा। लद्दाख में आइस इवेंट 23 से 27 जनवरी 2025 तक और जम्मू-कश्मीर में स्नो इवेंट 22 से 25 फरवरी 2025 तक आयोजित किए जाएंगे।

Result Mitra

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

- आइस हॉकी और आइस स्केटिंग दोनों ही बर्फ पर खेले जाने वाले लोकप्रिय खेल हैं, लेकिन इनमें कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं:

आइस हॉकी:

- खेल का उद्देश्य: दो टीमों के खिलाड़ी स्केट पहनकर बर्फ पर एक छोटी सी रबर की डिस्क (जिसे पक कहते हैं) को अपनी स्टिक से मारकर विपक्षी टीम के गोल में डालने का प्रयास करते हैं।

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

Result Mitra

आइस हॉकी:

- उपकरण: खिलाड़ियों को स्केट, हॉकी स्टिक, हेलमेट, पैड और अन्य सुरक्षा उपकरण पहनने होते हैं।
- खेल का मैदान: एक आयताकार बर्फ का मैदान, जिसे रिंक कहते हैं, इस्तेमाल किया जाता है।
- शारीरिक संपर्क: आइस हॉकी एक शारीरिक संपर्क वाला खेल है, जिसमें खिलाड़ियों के बीच टक्कर और शारीरिक संघर्ष आम बात है।

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

आइस हॉकी:

- टीम: प्रत्येक टीम में छह खिलाड़ी होते हैं (गोलकीपर सहित)।
- नियम: खेल के नियम काफी जटिल होते हैं, जिनमें ऑफसाइड, पेनाल्टी और अन्य नियमों का समावेश होता है।

Result Mitra

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

आइस स्केटिंग:

- खेल का उद्देश्य: आइस स्केटिंग में खिलाड़ी बर्फ पर स्केट पहनकर विभिन्न कलाबाजियाँ, नृत्य या दौड़ करते हैं।
- उपकरण: खिलाड़ियों को सिर्फ स्केट पहनने होते हैं। कुछ प्रकार की स्केटिंग में विशेष कपड़े पहने जाते हैं।

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

आइस स्केटिंग:

- खेल का मैदान: बर्फ का मैदान, जिसे रिंक कहते हैं, इस्तेमाल किया जाता है।
- शारीरिक संपर्क: आइस स्केटिंग में आम तौर पर शारीरिक संपर्क नहीं होता है, सिवाय कुछ सिंक्रोनाइज़्ड स्केटिंग के मामलों में।

आइस हॉकी और आइस स्केटिंग

आइस स्केटिंग:

प्रकार: आइस स्केटिंग के कई प्रकार होते हैं, जैसे:

- फिगर स्केटिंग: इसमें खिलाड़ी संगीत पर स्केटिंग करते हुए विभिन्न कलाबाजियाँ और नृत्य करते हैं।
- स्पीड स्केटिंग: इसमें खिलाड़ी बर्फ पर दौड़ लगाते हैं।
- सिंक्रोनाइज़्ड स्केटिंग: इसमें टीमों में खिलाड़ी एक साथ स्केटिंग करते हुए विभिन्न फॉर्मेशन बनाते हैं।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: खेलो इंडिया विंटर गेम्स के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 का आयोजन केवल जम्मू-कश्मीर में किया जाएगा, जहाँ स्नो स्पोर्ट्स की प्रतियोगिताएँ आयोजित होंगी।

2. इन खेलों का उद्देश्य शीतकालीन ओलंपिक के लिए प्रतिभाओं की पहचान करना और उन्हें मंच प्रदान करना है।

3. आइस हॉकी और आइस स्केटिंग दोनों खेलों में खिलाड़ियों के बीच शारीरिक संपर्क अनिवार्य होता है।

4. खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 का आयोजन दो चरणों में होगा, जिसमें लद्दाख में आइस स्पोर्ट्स और जम्मू-कश्मीर में स्नो स्पोर्ट्स आयोजित किए जाएंगे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

Result Mitra

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना क्यों हुआ महंगा ?

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

नेपाल सरकार द्वारा परमिट शुल्क में वृद्धि:

- नेपाल सरकार ने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए परमिट शुल्क में काफी वृद्धि की है। पहले यह शुल्क $11,000 प्रति व्यक्ति था, जिसे बढ़ाकर $15,000 कर दिया गया है। यह वृद्धि लगभग 36% है।

15000 × 80
1200000 – लाख

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना क्यों हुआ महंगा ?

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

शुल्क वृद्धि का उद्देश्य:

- इस शुल्क वृद्धि का मुख्य उद्देश्य पर्वतारोहण गतिविधियों को सुव्यवस्थित करना और एवरेस्ट पर कचरा प्रदूषण को नियंत्रित करना है।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

अन्य खर्च: परमिट शुल्क के अलावा भी कई अन्य खर्च होते हैं जो एवरेस्ट की चढ़ाई को महंगा बनाते हैं:

- उपकरण और गियर: चढ़ाई के लिए आवश्यक उपकरण जैसे हेलमेट, क्रैम्पन, कुल्हाड़ी, स्लीपिंग बैग, टैंट आदि काफी महंगे होते हैं।
- शेरपा गाइड: अनुभवी शेरपा गाइड की सेवाएँ लेना अनिवार्य है, जिनकी फीस भी काफी अधिक होती है।

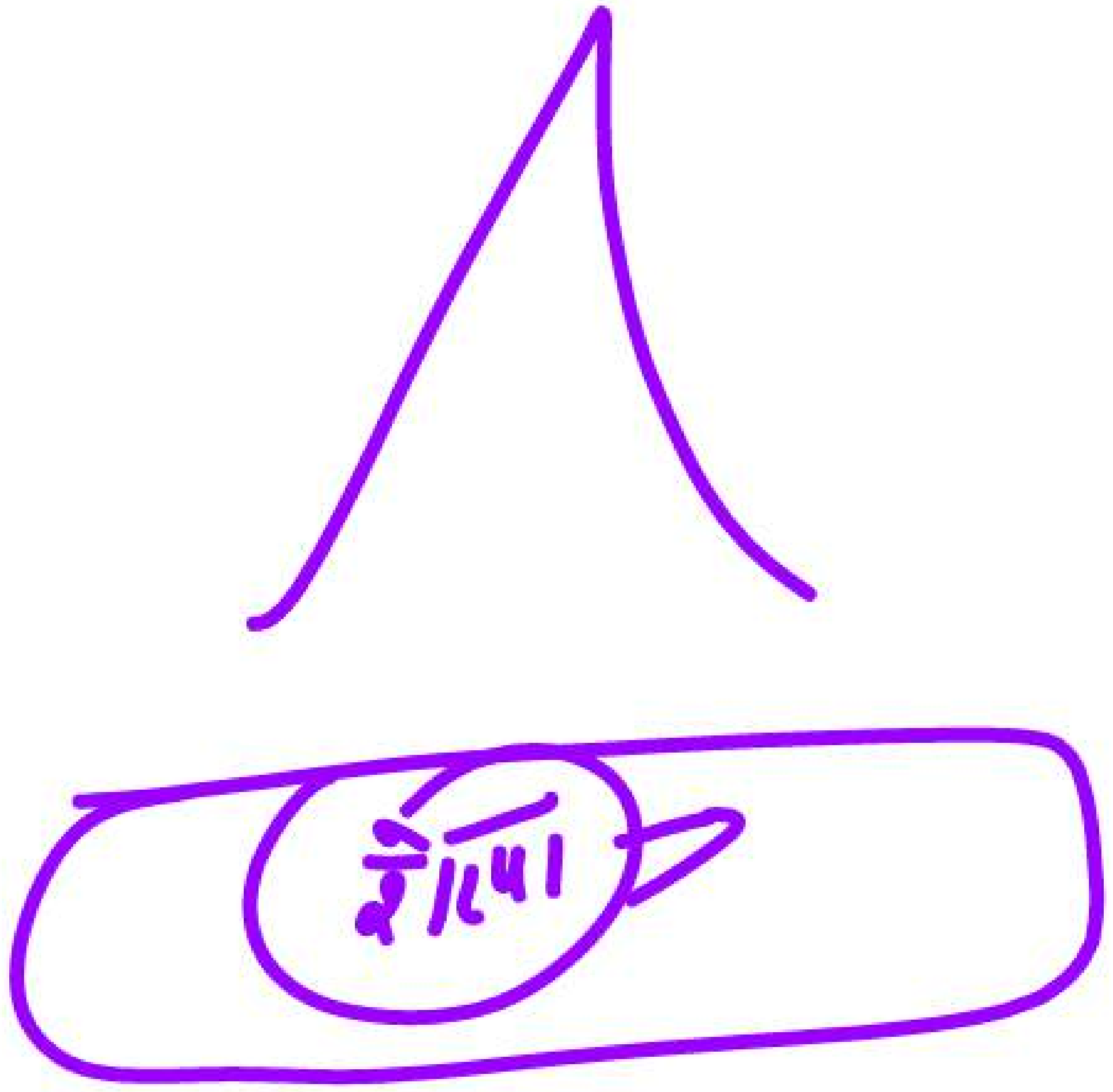

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

अन्य खर्च: परमिट शुल्क के अलावा भी कई अन्य खर्च होते हैं जो एवरेस्ट की चढ़ाई को महंगा बनाते हैं:

- परिवहन, भोजन और आवास: नेपाल में परिवहन, भोजन और आवास का खर्च भी चढ़ाई के कुल खर्च में जुड़ता है।
- बीमा: पर्वतारोहण के दौरान होने वाली किसी भी दुर्घटना के लिए बीमा कराना आवश्यक है, जिसका भी खर्च होता है।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

अन्य खर्च: परमिट शुल्क के अलावा भी कई अन्य खर्च होते हैं जो एवरेस्ट की चढ़ाई को महंगा बनाते हैं:

- व्यक्तिगत खर्च: व्यक्तिगत वस्तुओं और अन्य खर्चों को भी ध्यान में रखना होता है।
- शारीरिक प्रशिक्षण: एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए शारीरिक रूप से फिट होना बहुत जरूरी है, जिसके लिए प्रशिक्षण पर भी खर्च करना पड़ता है।

Result Mitra

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ना कई कारणों से महंगा हो गया है:

- **कुल खर्च:** इन सभी खर्चों को मिलाकर, एक पर्वतारोही को माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए लगभग 25 से 80 लाख रुपये तक का खर्च उठाना पड़ सकता है। कुछ मामलों में यह खर्च इससे भी अधिक हो सकता है।
- माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने की लागत परमिट शुल्क में वृद्धि, आवश्यक उपकरणों, शेरपा गाइड की फीस, परिवहन, भोजन, आवास, बीमा और शारीरिक प्रशिक्षण जैसे विभिन्न कारकों के कारण बढ़ गई है।

माउंट एवरेस्ट

- माउंट एवरेस्ट पृथ्वी का सबसे ऊँचा पर्वत है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 8,848.86 मीटर (29,031.7 फीट) है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का एक हिस्सा है और चीन और नेपाल की सीमा पर स्थित है।

Result Mitra

माउंट एवरेस्ट

कुछ मुख्य बातें:

- नामः इसका नाम भारत के सर्वेयर जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर रखा गया है। तिब्बती भाषा में इसे चोमोलुंगमा (Chomolungma) कहा जाता है, जिसका अर्थ है "पर्वतों की रानी"। नेपाली में इसे सगरमाथा (Sagarmatha) कहा जाता है, जिसका अर्थ है "आकाश की देवी"।
- भौगोलिक स्थितिः यह हिमालय पर्वत श्रृंखला के महालंगुर हिमाल उपखंड में स्थित है।

माउंट एवरेस्ट

चढ़ाई का इतिहास:

- पहली बार 29 मई 1953 को एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे ने इस पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की थी।
- तब से, हजारों पर्वतारोही इस पर चढ़ चुके हैं, लेकिन यह अभी भी एक खतरनाक और चुनौतीपूर्ण चढ़ाई है।

माउंट एवरेस्ट

चढ़ाई का इतिहास:

चढ़ाई के मार्ग: एवरेस्ट पर चढ़ने के दो मुख्य मार्ग हैं:

- दक्षिण कर्नल मार्ग (South Col route): यह नेपाल की ओर से है और सबसे लोकप्रिय मार्ग है।
- उत्तर कर्नल मार्ग (North Col route): यह तिब्बत (चीन) की ओर से है।

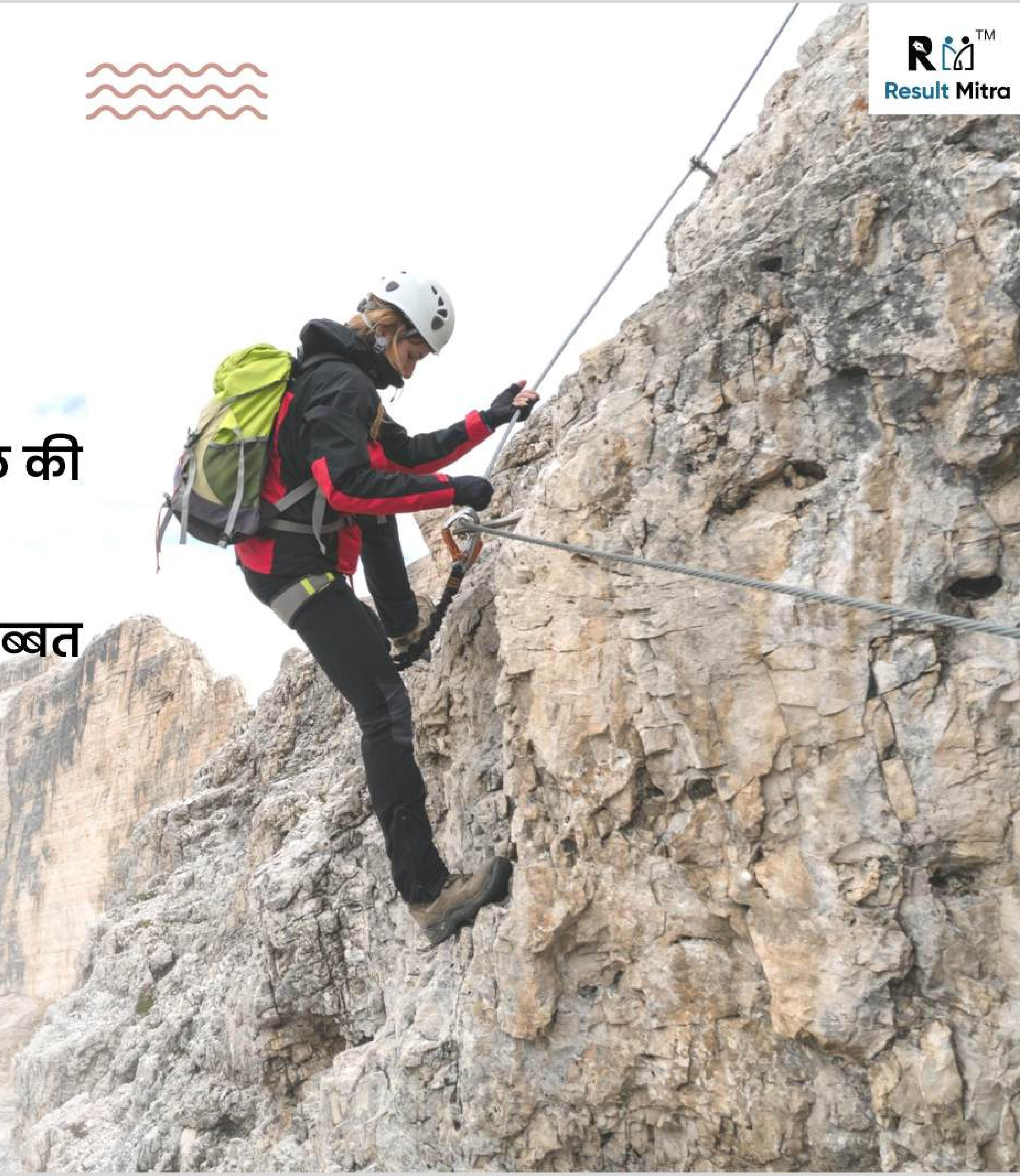

Result Mitra

माउंट एवरेस्ट

चढ़ाई की चुनौतियाँ:

- ऊँचाई: अत्यधिक ऊँचाई के कारण ऑक्सीजन की कमी एक बड़ी चुनौती है।
- मौसम: मौसम बहुत अप्रत्याशित हो सकता है और अचानक बदलाव आ सकते हैं।
- खतरनाक इलाके: बर्फ की दरारें, हिमस्खलन और अन्य खतरे होते हैं।

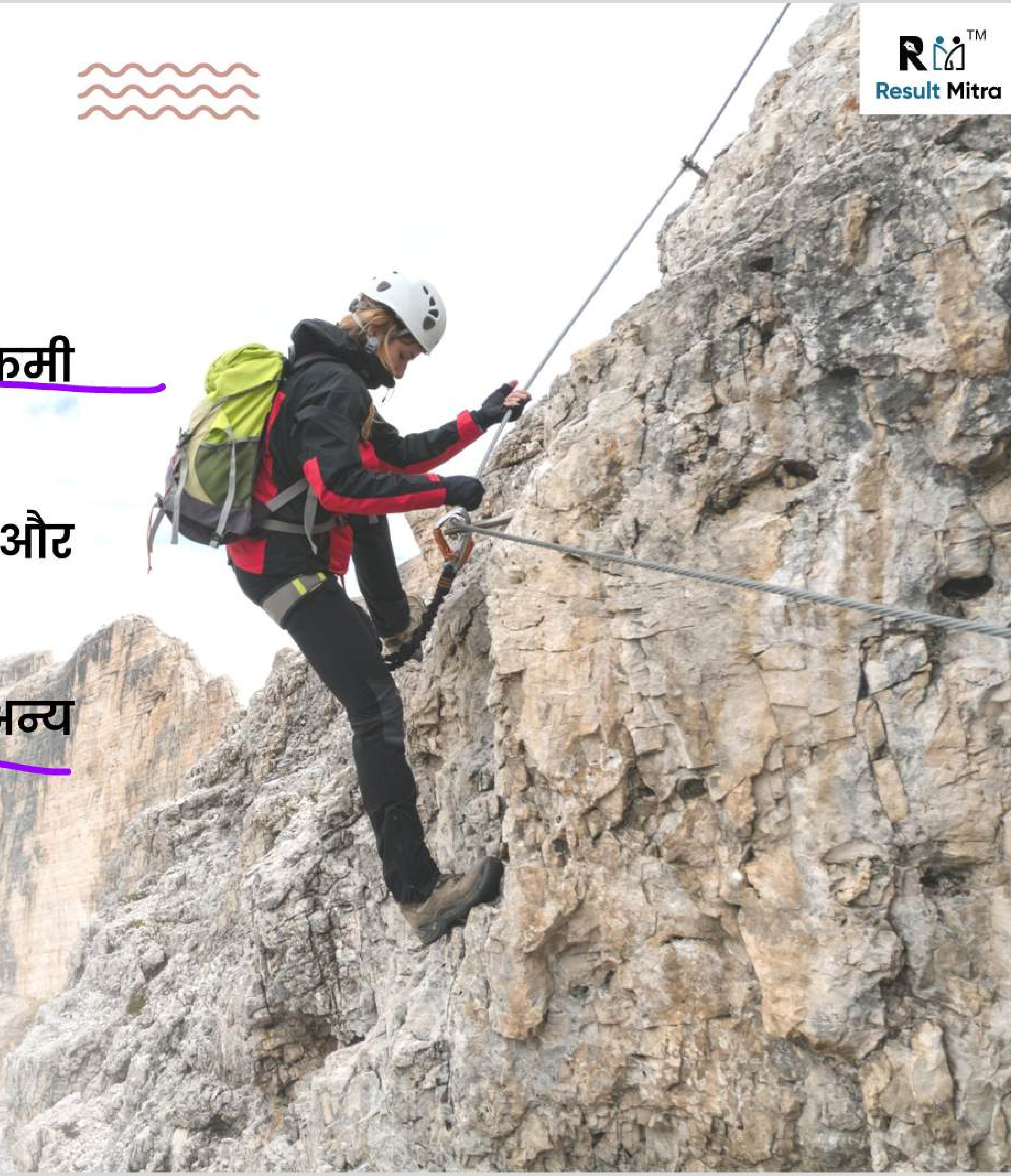

माउंट एवरेस्ट

पर्यावरणीय चिंताएँ:

- एवरेस्ट पर बढ़ती हुई चढ़ाई के कारण कचरा और प्रदूषण की समस्या भी बढ़ रही है।
- माउंट एवरेस्ट पर्वतारोहियों के लिए एक प्रतिष्ठित लक्ष्य है, लेकिन इसकी चढ़ाई बहुत जोखिम भरी होती है और इसके लिए बहुत तैयारी और अनुभव की आवश्यकता होती है।

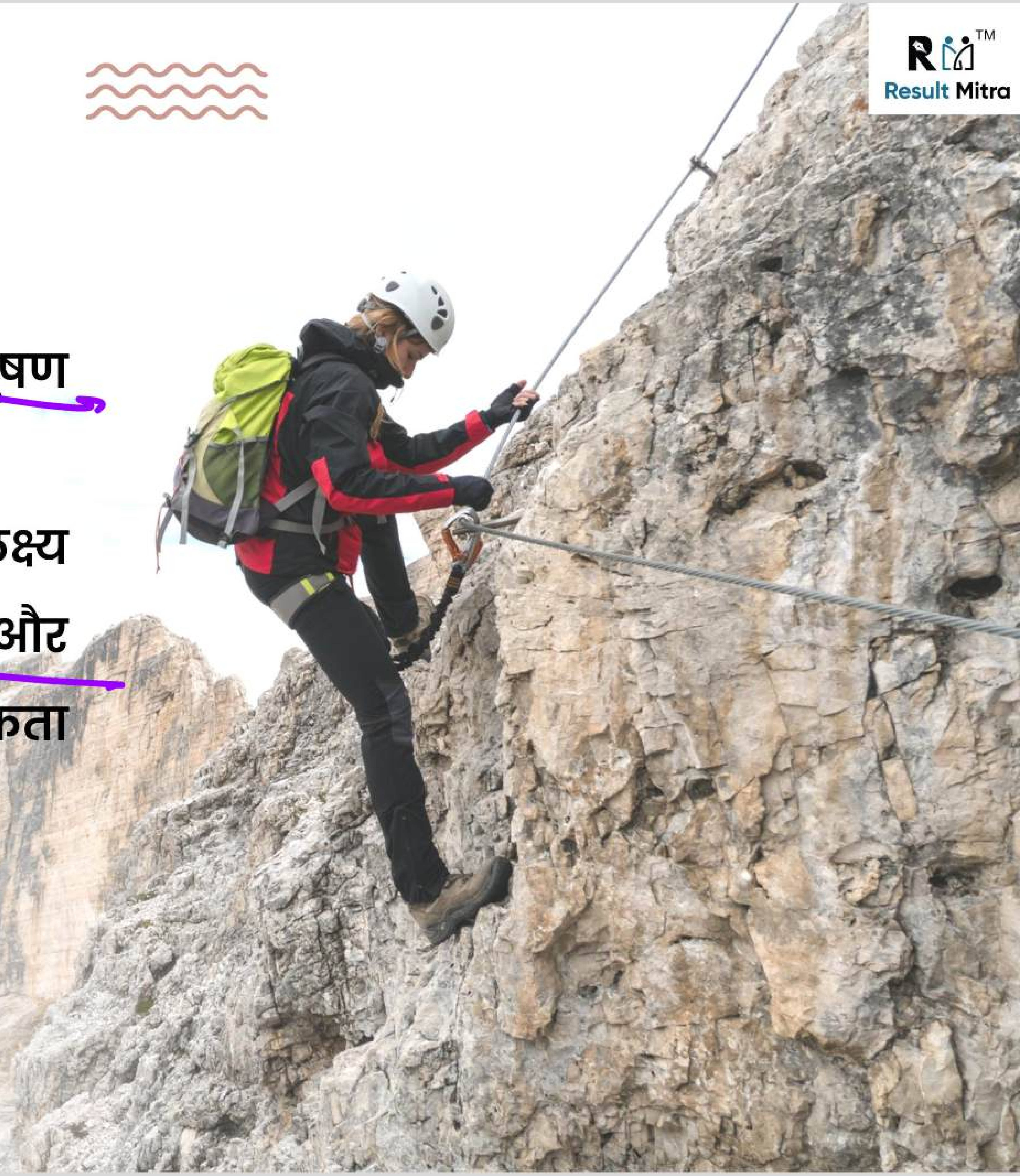

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: माउंट एवरेस्ट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. माउंट एवरेस्ट पृथ्वी का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है, जिसकी ऊँचाई समुद्र तल से 8,848.86 मीटर है, और यह भारत-नेपाल सीमा पर स्थित है।

2. माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई के दो मुख्य मार्ग हैं: दक्षिण कर्नल मार्ग, जो नेपाल की ओर से है, और उत्तर कर्नल मार्ग, जो चीन की ओर से है।

3. माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की लागत केवल परमिट शुल्क के कारण ही बढ़ी है।

4. पहली बार माउंट एवरेस्ट पर 1953 में एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे द्वारा सफलतापूर्वक चढ़ाई की गई थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

Result Mitra™

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023 से सम्मानित:

- **सम्मान की घोषणा:** राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नीरजा माधव (वाराणसी) को मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा वर्ष 2023 के लिए राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान प्रदान किया जाएगा।
- **सम्मान में शामिल:** इस सम्मान के तहत उन्हें ₹5,00,000 (पाँच लाख रुपये) की राशि, सम्मान पट्टिका और शॉल-श्रीफल प्रदान किया जाएगा।

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023

मैथिली शरण गुप्त सम्मान के बारे में:

- यह सम्मान हिंदी साहित्य के क्षेत्र में श्रेष्ठ उपलब्धि और सृजनात्मकता को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। इसका नाम खड़ी बोली के शीर्ष प्रवर्तक कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की स्मृति में रखा गया है।

मैथिली शरण गुप्त सम्मान के बारे में:

- **पूर्व सम्मानित व्यक्ति:** विकिपीडिया पर इस सम्मान से पूर्व में सम्मानित व्यक्तियों की सूची भी दी गई है, जिनमें शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन शास्त्री, केदारनाथ अग्रवाल, कृष्णा सोबती जैसे कई प्रतिष्ठित साहित्यकार शामिल हैं।

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023

Result Mitra

मैथिली शरण गुप्त सम्मान के बारे में:

- संक्षेप में, डॉ. नीरजा माधव को हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023 से सम्मानित किया जाएगा।

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023

Result Mitra™

डॉ. नीरजा माधव

- डॉ. नीरजा माधव एक प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकार हैं। उन्हें हाल ही में मध्य प्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2023 के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया गया है।
- निवास: वे वाराणसी, उत्तर प्रदेश में रहती हैं।
- लेखन: वे उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँ लिखती हैं।

डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन द्वारा राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान 2023

डॉ. नीरजा माधव

कृतियाँ (कुछ मुख्य):

- चिटके आकाश का सूरज
- अभी ठहरो अंधी सदी
- आदिमगन्ध तथा अन्य कहानियाँ (कहानी-संग्रह)
- प्रस्थानत्रयी (कविता-संग्रह)
- यमद्वीप
- तेभ्य स्वधा (उपन्यास)

डॉ. नीरजा माधव

पुरस्कार और सम्मान:

- राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान (2023)
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'सर्जना पुरस्कार'
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'यशपाल पुरस्कार'
- मध्य प्रदेश का 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार'
- 'शंकराचार्य पुरस्कार'
- 'शैलेश मटियानी राष्ट्रीय कथा पुरस्कार'
- 'राष्ट्रीय साहित्य सर्जक पुरस्कार'
- लेजिस्लेटिव असेम्बली, अल्बर्टा (कनाडा) द्वारा मौलिक लेखन के लिए सम्मान (जुलाई 2018)

डॉ. नीरजा माधव

पद:

- कार्यक्रम अधिशासी, दूरदर्शन केन्द्र, वाराणसी (पूर्व में)
- 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' की न्यासी सदस्य (भारत सरकार द्वारा नामित)
- शिक्षा मंत्रालय के लेखक सदस्य (भारत सरकार द्वारा नामित)
- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कबीर अकादमी की सदस्य
- डॉ. नीरजा माधव की रचनाएँ विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी पढ़ाई जाती हैं। उन्हें हिंदी साहित्य में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है।

मैथिली शरण गुप्त

- मैथिली शरण गुप्त हिंदी साहित्य के एक महान कवि थे, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से भी सम्मानित किया जाता है। वे खड़ी बोली कविता के प्रारंभिक और महत्वपूर्ण कवियों में से एक थे।

मैथिली शरण गुप्त

उनके जीवन के कुछ मुख्य पहलू:

- जन्म: 3 अगस्त 1886 को चिरगाँव, झाँसी, उत्तर प्रदेश (तत्कालीन ब्रिटिश भारत) में हुआ था।
- शिक्षा: उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। बाद में उन्होंने झाँसी के एक स्कूल में पढ़ाई की।
- साहित्यिक जीवन: उन्होंने कविता लिखना बचपन में ही शुरू कर दिया था। उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता, देशभक्ति, सामाजिक सुधार और भारतीय संस्कृति के विषयों पर जोर होता था।

मैथिली शरण गुप्त

प्रमुख रचनाएँ:

- भारत-भारती: यह उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, जो 1912 में प्रकाशित हुई थी। इसमें भारतीय इतिहास और संस्कृति का वर्णन है।
- साकेत: यह रामकथा पर आधारित एक महाकाव्य है, जिसमें लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के चरित्र को विशेष महत्व दिया गया है।
- पंचवटी: यह राम, सीता और लक्ष्मण के वनवास के समय की कथा पर आधारित है।

मैथिली शरण गुप्त

प्रमुख रचनाएँ:

- यशोधरा: यह गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा के त्याग और बलिदान की कहानी है।
- द्वापर: यह महाभारत के समय की कथाओं पर आधारित है।
- जयद्रथ वध: यह महाभारत के एक पात्र जयद्रथ की कथा पर आधारित है।

मैथिली शरण गुप्त

- भाषा: उन्होंने खड़ी बोली में कविताएँ लिखीं, जो उस समय हिंदी कविता की मुख्य भाषा बन रही थी। इससे पहले ब्रजभाषा का प्रयोग अधिक होता था।
- राष्ट्रीयता: उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

मैथिली शरण गुप्त

सम्मान:

- उन्हें 1954 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
- उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि भी दी गई थी।

मैथिली शरण गुप्त हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि हैं और उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं।

Result Mitra

CURRENT AFFAIRS QUIZ

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि थे और उन्होंने खड़ी बोली हिंदी कविता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

2. उनकी रचना 'भारत-भारती' में भारतीय इतिहास और संस्कृति का विस्तृत वर्णन है, जो राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में सहायक सिद्ध हुई।

3. उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि महात्मा गांधी द्वारा प्रदान की गई थी।

4. 'साकेत' उनकी एक प्रसिद्ध रचना है, जिसमें रामकथा के साथ-साथ उर्मिला के चरित्र का भी मार्मिक चित्रण है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

Thank You

Result Mitra